क्या समलैंगिकता पाप है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

जब यह सवाल उठता है कि क्या समलैंगिकता पाप है, तो हमें सबसे पहले यह देखना चाहिए कि बाइबल इस विषय में क्या कहती है। बाइबल में कई स्थानों पर समलैंगिक संबंधों के बारे में बहुत स्पष्ट बात की गई है। उदाहरण के लिए:

लैव्यवस्था 18:22 कहती है:
“तू पुरुष के साथ स्त्री समान शयन न करना; यह घृणित बात है।”

और लैव्यवस्था 20:13 में लिखा है:
“यदि कोई पुरुष किसी पुरुष के साथ वैसे ही शयन करे जैसे
स्त्री के साथ किया जाता है, तो दोनों ने घृणित काम किया है;
वे निश्चय मारे जाएँ, उनका खून उन्हीं के सिर पर होगा।”

ये वचन यह आधार प्रदान करते हैं कि क्यों बाइबल समलैंगिक कृत्यों को पाप कहती है।

हालाँकि, यहाँ एक और महत्वपूर्ण बात समझने की ज़रूरत है: बाइबल यह भी सिखाती है कि हम सब एक पापमयी स्वभाव के साथ जन्मे हैं—जैसे क्रोध, घमंड, वासना और लोभ। लेकिन समलैंगिक आकर्षण कोई जन्मजात स्वभाव नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी प्रवृत्ति है जो जीवन में आगे चलकर चुनी जाती है। इसी कारण यह एक जानबूझकर किया

क्या समलैंगिकता पाप है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

गया पाप माना जाता है, न कि एक ऐसा गुण जो जन्म से हमारे अंदर होता है।

बाइबल की जीवन और सृष्टि के बारे में शिक्षा हमें यह समझने में मदद करती है कि समलैंगिक संबंध परमेश्वर की योजना के विरोध में क्यों हैं। उत्पत्ति की पुस्तक में, परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को विवाह और संतानोत्पत्ति के उद्देश्य से बनाया। यदि सभी एक ही लिंग के होते, तो जीवन आगे नहीं बढ़ सकता था। यही कारण है कि बाइबल समलैंगिक संबंधों को “मृत्यु के पाप” के रूप में देखती है—क्योंकि ये जीवन और सृष्टि की मूल भावना के विरुद्ध हैं।

और हम इन पापों का परिणाम सदोम और अमोरा के नगरों में देखते हैं, जहाँ समलैंगिकता सहित अनेक पापों के कारण परमेश्वर का न्याय बहुत कठोरता से आया।

एक व्यापक दृष्टिकोण:

1. परमेश्वर का प्रेम सभी के लिए है:
यह समझना बहुत आवश्यक है कि यद्यपि बाइबल पाप की निंदा करती है, फिर भी परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति से अत्यंत प्रेम करता है। उसकी अनुग्रह सबके लिए उपलब्ध है, चाहे हम किसी भी प्रकार के पाप से संघर्ष कर रहे हों। यीशु इस संसार में हमें दोषी ठहराने

क्या समलैंगिकता पाप है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

नहीं, बल्कि उद्धार देने आए थे। उनका प्रेम बिना शर्त है, और वह चाहते हैं कि हम सभी उनके पास क्षमा और चंगाई पाने के लिए आएँ।

यूहन्ना 3:16-17
“क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश
न हो, पर अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में इसलिये नहीं भेजा कि वह संसार की दोष- सिद्धि करे, परन्तु इसलिये कि संसार उसके द्वारा उद्धार पाए।”

2. उद्देश्य है परिवर्तन – न कि केवल दोष देना:
परमेश्वर का हृदय केवल दोष देने का नहीं है, बल्कि जीवन में परिवर्तन लाने का है। पाप वह चीज़ है जो हमें परमेश्वर से अलग करती है, लेकिन खुशखबरी यह है कि यीशु चंगाई और पुनःस्थापना प्रदान करते हैं। पश्चाताप का अर्थ शर्मिंदा होना नहीं, बल्कि जीवन में बदलाव लाना और एक नई शुरुआत करना है।

2 कुरिन्थियों 5:17
“इसलिये यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है: पुरानी

क्या समलैंगिकता पाप है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

बातें बीत गईं, देखो, सब कुछ नया हो गया।”

3. स्वतंत्रता की ओर व्यावहारिक कदम:
यदि आप समलैंगिक आकर्षण या किसी अन्य पाप से संघर्ष कर रहे हैं, तो आशा है। आप ये कदम उठा सकते हैं:

परमेश्वर से शक्ति और चंगाई के लिए प्रार्थना करें।
उसका वचन नियमित रूप से पढ़ें और पवित्र आत्मा को अपने हृदय में काम करने दें। एक सहायक मसीही संगति से जुड़ें—ऐसी जगह जहाँ आप प्रेम और प्रोत्साहन पाएँ। किसी विश्वसनीय आत्मिक मार्गदर्शक से सलाह लें जो आपके साथ इस यात्रा में चल सके।

4. प्रेम के साथ सत्य बोलें:
मसीहियों के रूप में, हमें सत्य को बोलने के लिए बुलाया गया है—लेकिन हमेशा प्रेम और करुणा के साथ। यह दूसरों को दोष देने का विषय नहीं है, बल्कि मसीह में सच्ची स्वतंत्रता के मार्ग को दिखाने का विषय है। हमें ऐसे ढंग से सत्य बोलना है जो परमेश्वर के प्रेम को दर्शाता हो, ताकि लोग उससे संबंध में आ सकें।

क्या समलैंगिकता पाप है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

इफिसियों 4:15
“हम प्रेम में सत्य बोलते हुए सब बातों में उसके बढ़ते जाएँ
जो सिर है, अर्थात मसीह।”

अंतिम उत्साहवर्धक बात:

यदि आप समलैंगिक आकर्षण या किसी भी अन्य पाप से संघर्ष कर रहे हैं, तो जान लें कि परमेश्वर का अनुग्रह आपके संघर्ष से कहीं बड़ा है। वह क्षमा, चंगाई और यीशु के माध्यम से पूर्ण रूपांतरण प्रदान करता है। पश्चाताप शर्म का विषय नहीं है, यह उस योजना को अपनाने का अवसर है जो परमेश्वर ने आपके लिए बनाई है—एक नई शुरुआत, एक नया जीवन।

Share on:
WhatsApp